B-4
L-4

ETHICS

मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र के निर्धारक :-

क्या है? →

जिसके आधार पर मानव के बौद्धिक क्रिया कलापों को उचित या अनुचित के रूप में निर्धारित करते हैं वे नैतिकता के निर्धारक माने जाते हैं।

विवेचना क्यों? →

↳ इससे उचित या अनुचित का निर्धारण करने में आसानी होती है।

↳ इससे हमें यह पता चलता है कि किसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इससे निर्धारण में आसानी होती है।

↳ इससे मनमानेपन पर रोक लगती है, इससे नैतिकता के निर्धारण का वस्तुनिष्ठ आधार

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

मिल जाता है जिससे नैतिकता में एकरूपता आती है।

नैतिकता के निर्धारक →

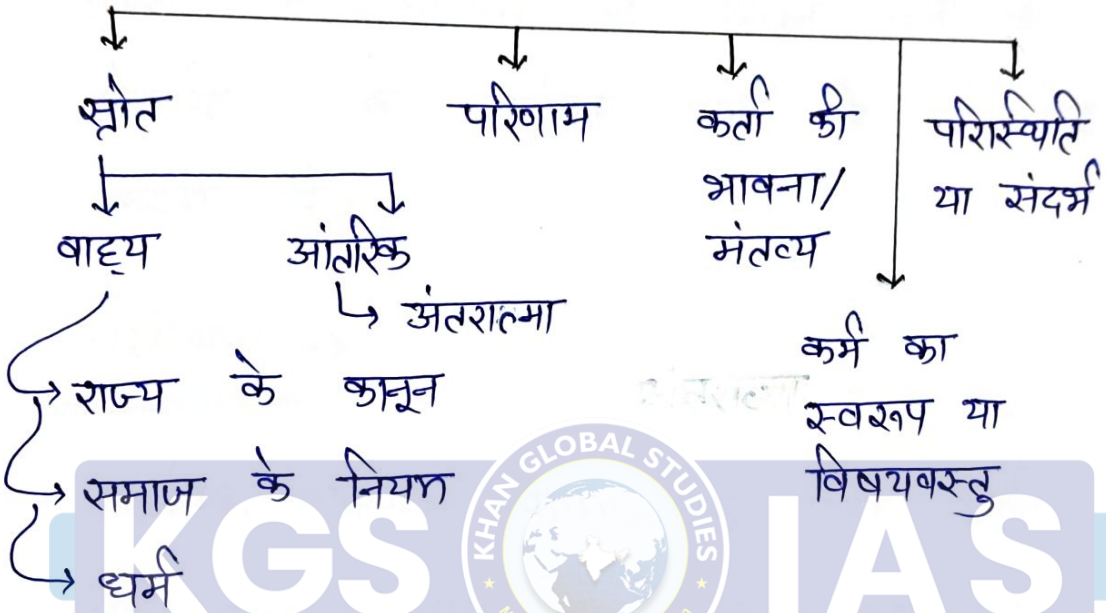

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

राज्य के कानून नैतिकता के निर्धारक →

- राज्य के कानून नैतिकता के निर्धारक हैं, राज्य समाज में शांति एवं व्यवस्था, लोगों के अधिकारों की रक्षा, उन्हें न्याय दिलाने तथा देश की एकता व अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए कानून बनाता है, अतः जो कर्म कानून के अनुरूप हैं वह

उचित है और जो उनके विपरीत है वह अनुचित है।

- राज्य दण्ड के भय एवं पुरस्कार व प्रशंसा के माध्यम से उचित कर्मों को प्रोत्साहित व अनुचित कर्मों को हतोत्साहित करता है।

आलोचना →

- प्राकृतिक आपदा साम्प्रदायिक दंगे आदि के समय जब लोगों के जान-माल की रक्षा करना आवश्यक होता है, वैसी स्थिति में नियम और कानूनी प्रक्रिया का एक सीमा तक उल्लंघन किया जा सकता है।
- राज्य के कानून कई बार पुराने और ऐसे कानूनों के आधार पर नैतिकता का निर्धारण नहीं किया जाना चाहिए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- कुछ विशेष परिस्थितियों में जब प्रयोजन बहुत अच्छा हो और विभिन्न विकल्पों का अभाव हो तो फिर वैसी स्थिति में भी कानूनों का उल्लंघन किया जा सकता है।
- विभिन्न देशों के कानूनों में अंतर दिखाई देता है ऐसी स्थिति में उचित, अनुचित का निर्धारण कठिन हो जाता है।
- हमें सामान्यतः राज्य के नियमों और कानूनों का पालन करना चाहिए परंतु कुछ विशेष परिस्थितियों में जब प्रयोजन बहुत अच्छा हो तो प्रगतिशील मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु कानून और नियमों का एक सीमा तक उल्लंघन किया जा सकता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

समाज नैतिकता का निर्धारक है→

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से समाज के रीति-रिवाजों, परंपराओं, व्यवहार के तरीकों और प्रचलनों की सीखता है। ये सामाजिक नियम और परंपराएँ हैं नैतिकता के निर्धारक हैं अर्थात् इनके अनुसार कार्य करना उचित है व विपरीत कार्य करना अनुचित है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

आलोचना→

- समाज में कई रूढ़िवादी परंपराओं एवं कुरीतियों का प्रचलन होता है, जैसे- दहेज प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत आदि।
- समाज अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं को आसानी से नहीं छोड़ता परिणामस्वरूप समाज को प्रगतिशील मानवीय मूल्यों से जोड़ने में कठिनाई होती है।

कई बार सामाजिक संगठन भी नैतिकता के निर्धारण का प्रयास करते हैं, जैसे- खाप पंचायतें, इन्हें सामाजिक दर्जा तो प्राप्त है परंतु कानूनी दर्जा प्राप्त नहीं है, कई बार ऐसे कार्य करते हैं जिनसे प्रगतिशील मानवीय मूल्यों पर प्रहार होता है।

धर्म नैतिकता का निर्धारक है →

अधिकांश धार्मिक व्यक्ति यह मानते हैं कि धर्मग्रंथ और धर्माचार्य ही नैतिकता के निर्धारक हैं अर्थात् इनके अनुसार कर्म करना उचित है और इनके विपरीत कर्म अनुचित है।

धर्म प्रायः स्वर्ग के लोभ और नरक के भय के माध्यम से धर्म ग्रंथों में वर्णित कर्मों को प्रोत्साहित व विपरीत कर्मों को हतोत्साहित करता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

आलोचना →

धर्म के नाम पर कई बार रूढ़िवादी परंपराओं एवं अंधविश्वासों का समर्थन किया जाता है जिसे उचित नहीं माना जा सकता।

धर्म मनुष्य को परलोकमुखी एवं भाग्यवादी बनाता है, इस रूप में यह पलायनवाद को बढ़ावा देता है।

कार्ल मार्क्स के अनुसार धर्म अफीम के समान है यह पूँजीपतियों द्वारा गरीबों के शोषण का साधन है, धर्म गरीबों को गरीबी में ही संतुष्टि प्रदान कर देता है, उन्हें गरीबी के कारणों का पता नहीं लगने देता, ऐसी स्थिति में धर्म को नैतिकता का निर्धारक नहीं माना जा सकता।

KGS IAS

धर्म

↓

दो पक्ष

आंतरिक

⇓

मूल तत्व / बुनियादी तत्व

⇓

- दया, करुणा, प्रेम, त्याग, न्याय, सत्य, अहिंसा आदि।
- नैतिक और सामाजिक मूल्यों की बात।
- वर्तमान में विभिन्न धर्मों का आंतरिक पक्ष गौण हो गया है, यह एक गंभीर समस्या है।
- गांधी इसी संदर्भ में कहते हैं कि सभी धर्मों में बुनियादी एकता है।

वाह्य

⇓

कर्मकांडीय पक्ष

⇓

पूजा, प्रार्थना, अरदास, नमाज, प्रेयर

मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि।

- वर्तमान में वाह्य पक्ष प्रधान।
- वाह्य पक्ष को लेकर विविधता की स्थिति, परिणामस्वरूप समाज में परस्पर अविश्वास, संघर्ष, कट्टरता और सांप्रदायिकता की स्थिति दिखाई देती है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

परिणाम नैतिकता का निर्धारक है→

परिणामवाद वह नैतिक सिद्धांत है जिसके अनुसार किसी व्यक्ति के कर्म के उचित या अनुचित होने का निर्धारण उस कर्म से उत्पन्न परिणाम के आधार पर किया जाता है। सुखवाद, उपयोगितावाद आदि परिणाम सापेक्ष नैतिक सिद्धांत हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR